- Title AINI
- Accession No Title
- Accession No
- Folio No/ Pages -
- Lines-
- Size
- Substance Paper –
- Script Devanagari
- Language -
- Period -
- Beginning –
- End -
- Colophon-
- Illustrations -
- Source -
- Subject -
- Revisor -
- Author -
- 1. Remarks- 34401

Mārkandeya-Purāna, Varanasi. Chowkhamba Vidyabhawan, 1961. 000 Sukla, Badri Nath. 39,731. 1476.

ENKLERGEBRISHER BERRENTER BRENTER BRITISH STERNING STERNI उन्नानाधिकारः करत्रपालकारिषाता मध्येषारदेष्र तिष्णपञ्चा नातः नेकरं त्रपालमा त्रणा क्षेत्रमा विषये। ली हते द्वा विषयिष्ये तिष्णपदा तरते विषये विषये विषये विषये विषये त्रिया त्रा त्रिया त्रा त्रा त्रा त्रा त्रा त्रा त्रा विषये त्रा विषये विषये विषये विषये विषये विषये हर्निज वात पृद्धान निर्माण कार्या है। विस्ता है के वित्र एक मुनामा के साथा विवाद ता ता ता है के स्वाद के स्व विति ए में जुनिति देश गरिए ग्रं वा कि प्रिंग कि स्व के स्व का वा वा प्रिंग के जा वा ना जा प्राप्त के जा के प्र प्रस्ति हैं के स्व क्षित्र के स्व कि के से कि के से कि के से कि के से कि से में कि से में कि से कि कि से कि स गेर्केल कार वंभे कवता संप्राणितिशेष दिवारियाय ने अभिश्योर हा त्यायायाय ते बया विवार के अंग हा गावित्र प्रवेश के वंशे के वंशे के विवार विवार के या विवार के विवार के या विवार विक्रियंत्रे त्रेपार्वात्वर्वाद्वर्वात्रेया भवाते व्यवनातिक विद्यात्र वित्रवित्र विद्यात्र वित्रवित्र त्राव तर्याः वर्षात्र विद्यात्र वित्रवित्र त्राव तर्याः वर्षात्र वित्रवित्र त्राव तर्याः वर्षात्र वित्रवित्र त्राव तर्याः वर्षात्र वित्रवित्र वर्षात्र वर्य वर्षात्र वर्यात्र वर्यात मविष्य इतेत योष्र मोल १ - ५ न्यवदी का विकासिकार के शिति जाय के शित्र में ले ते विवास के वे के विकास के ति सति न व दिसा मिल्यों ए महाया हो तह अब में महाया है के स्वार्थ के स्वार्थ है के स्वार्थ के स्वार् वर्ष ततेत्र वित्र हे तत्र हे तत्र हे ता त्र हे त्र विवास के विवास के विवास के त्र ति के त्र विवास के त्र विवा ध्यम्बन्धियो साधिकारः महाकिति। विते हे उदिस्वयं मास्त्रे मेरे करा सुन्ने गर्भक्षविद्यार्थस्य नामित्र स्र मार्टः राह्य स्थापित हे व्यक्ति है व्यक्ति है व्यक्ति है विकार किया है विया है विकार किया है विकार किया है विकार किया है विकार किया है विय मण्डिया विकास कि विकास कि विकास के कि विका मित्रिं कियो विश्व के विश्व के

कृतारे हास्पयोः शायो हिर हिप्तः विस्ति वह लावर लाम अवकृत्य स्थान विस्ति वह स्थान विस्ति वह स्थान विस्ति वह स्थान स्थ

प्रवासकायतयः महास्रमेगहस्यानाप्रतियर्थः मसद्गातामोत्ते रत्नां ना हस्यादीनां न्यादिशयाकामक्री धनवादयः त्रां वदभ्याये पावती भ्यायास्तावतें त्रुप्रहरूष्यः ए दिनस्त्री भ्रानवास्त्रे भः सम्रमः २ तम तम तम

मन्त्रताल भः वावा क्रिक्षेत्र मन्त्रतावा क्रिक्षेत्र स्वाते हुन तर्ण व नार्वा । जन्न पंछा त्रावा मन्त्रता स्वात क्रिक्ष मन्त्रता स्वात क्रिक्ष क्रिक्

त्वमलेनताः नेषाः दे

सङ्ग्रेमचेतरशादेग्रेट स्वर्णः स्वयवार्णावगतिस्व स्वर्णाण्यत्यस्य स्वाणाने चारणिवति मेत्रिकीति विविधिकारेतपः प्रचेतति ।

सङ्ग्रेमचेतरशादेग्रेट स्वर्णः स्वयवार्णावगित्रस्व स्वर्णालाक्ष्य स्विधिकार प्रवेशिकार प्रवेशिकार स्वर्णाने स्वर्णा स्वर्ण

नन्याति हें विस्तारित धर्में देव निवाद व्याविश्वित विद्यावित विद्यावित करियात्र विस्तारित विकारित होता त्र विवस्त हात्र विस्तारित करिया क

त्रधावताः क्षेत्राः वा स्टेल्ट्रहत्मः कस्मवतारत्तस्यात्रक्षितंदश्रमेततं ५ नेष्क्रतेनयुग्यातन्त्रारिकायाक्तेत्रिया चतुत्रस्तरते भूगतः २ हिर्ग्यतये कात्रात् द् वाकर्यवात्ययोगे दक्षेत्रार्थितः चन्यागाकुत्रकत्तेत्रव्यवस्थारिक व

गलकी वेनावार प्रसारित निकार निकार निकार निकार निकार प्रिकार निकार निकार

एवं नवमर्थमताक्रमप्राप्तंदग्रमा ध्वात विशेषाति नविराध्यावान्त्रातिनवं सक्या निरोधानरणमा ह निरोधानामित नद्वरा नाह सचतुर्वधः १ तिहरूक्ति नेति तिहर कि यो जा जिला है नेत्याने प्रमान केता है ने कि ने ने ति कि ने ने ति कि ने नातासासातारा देने ते मुक्ति दे सम्बतार हो जा ने विस्तार में विस्ता क्तिचारममेखंधियवध्यामरतिरितः विरोधीयानवस्त्रामंक्त्राः सच्तिविधः । येत्रितिकः स्रावतिकान्यतितिदिनापुष्ठीः त्रियः प्रतितः कितः प्रतिक दिश्यतः ये निवित्वे विशेषां यो धर्म प्रतिविवित्व स्ति विशेषा ये विशे वारमानभवः विश्वनिष्यभागार नाणातवोः काराविकातार अनार्यन नाम्यु नेवार्यनस्पेवपुराता युश्वनित्र प्रतिनात् । तः पु नरमुश्रामान्त्रक्षित्रनार माध्यरित सभागावनारा त्याः त्रयः श्राम्य तिकातिन नेत्रितिनाः सार्यस्य न नर्यः ध्यापे न नत्र नाम्य 

मित्र मार्था विश्व मित्र मित् सत्रियोतिक्रातिक्रिकासिक्रियोतिः गामनः सम्पद्धवाष्ट्रवाष्ट्रवाष्ट्रवात्रात्रवात्रात्रे । वद्यत्रे ने तिस्तिक्ष प्रा कालाशाः गामाण्याद्यात्रक्राव्यात्रक्षत्रवात्रक्षत्रक्षत्रे । ने ने ने ने निस्तिक्षत्रक्षत्रक्षत्रक्षत्रक् म्यस्व रुपहः र हिर्गणात्मामण्यवगहण्यमगरः वधम्बद्वत्वात्रव्यात्रात्मात्मातः ह वर्षमनेहरसाक्षाद्व वर्मनेति ताम्याक ६मरे वह तिम्यां एत्रहों गामनंते : कित्ने नद्वह ति न्यां नित्ते ति सत्ते त्यां पात्रहाति । स्व वर्मनेति ताम्याक ६मरे वह तिम्यां एत्रहार १ ५ भित्रियामय ज्ञान का लारी तिल लारा मान द्वारा माने नेत्रहायो वर्मा पायाता वर्मनेति तासाधः नदते प्रत्यवाणां मानेति तासां करियो कित्रहारी के वर्षा हात्रहारी ति स्वार्थ कर्मा पायाता कर्मा पायाता कर्मा पायात् । स्वार्थ कर्मा विवार कर्मा विवार कर्मा कर्मा विवार कर्मा कर्मा विवार कर्मा कर्मा विवार कर्मा कर्मा विवार कर्मा कर्मा कर्मा विवार कर्मा कर्मा कर्मा विवार कर्मा कर्मा कर्मा कर्मा कर्मा कर्मा कर्मा कर्मा क्रिक्स कर्मा क्रिक्स कर्मा क्रिक्स क्रिक्स कर्मा क्रिक्स कर्मा क्रिक्स क्रिक्स कर्मा क्रिक्स कर्मा क्रिक्स कर्मा क्रिक्स क्रिक्स कर्म क्रिक्स कर्मा क्रिक्स कर्म क्रिक्स क्रिक् विस्तित्वम्यानात्रात्रात्रात्रात्र्वेत् तिवद्येषात्रविद्यात्रवर्षे प्रध्यायाचा इमेरितिः षादः १६ १ ति प्राप्तागवरे उत्तीव

एवं सर्ग मना ने दे ति सर्ग मन ते ने दे तो से ति ता ति स्वार के स्वार से स्वार के स्वार के स्वार के स्वार के स्व रिक्ष के स्व के स्वार के स्वर के स्वार के

एकोनित्रं स्वामितिकास्तर्यशिक्षः विसर्गः कार्यस्थातिः कार्यवस्ता चतिर्धं स्वामित्रा हिन्द्र विसर्गः कार्यस्य स्वामित्रं कार्यवस्ता

किय

विश्व हैं ता से दें का पार्टि कि द्वाना सि विश्व मारित को वर्ष का विश्व के विश्व विश्व विश्व के विश्व

कितिहरणाच्यावेधार्वेताक्षणाच्या हो। देहासाधारणेकी वे अवाजी निवास के के किता के किता के किता के किता के किता के व

विमर्ग खेल्तुन से वर्म स्थानिक से स्थान विमान स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स

एवं डाम्यामिश्रादिएं से ते वर्तवाता मना लिसायाः प्रथम भरे संभवन्तुं । करीय सारियाताः करी मार्स में देवे बारणानी नगडे त्वामहराद नहानी ने सा बाहा शामिश्रीः सा खोणवी गमाने व्यक्ति ना देव भी नार हमराप्रकारणकार्यात्र विदुश्यायिते भेत्रेयोविद्रायबोगमार्भाणमणकार्यात्र के वितरिदेव हिंदी क्षेत्रंत्र अपन्य प्रमानिक प्रकार के वितरिदेव हिंदी क्षेत्रंत्र अपने प्रमानिक के विद्राय के विद्रा प्राचाला यह सहामः नत्र वा बातक्षक राणा व्याह त्र के कार्य के रात्र वा हिल्ला साम के किया है निवस्त के किया है के किया है किया है कि किया है कि किया है किया है कि किया है किया तनीयत्त्रभितिशयध्यायाः सर्भवलिते सर्गः कारणसंभाति नामायोगान्ययाः विद्रायोगाः यगिने त्रेपोदे यहत्वे व विद्यः सार्थित्रते यावित्ति हासावित्रीयः के यक्तिशानित्राः त्रवतिविद्यः गमः अष्ट्रितः सर्गवित्ताः सपूरित्ते। उत्ताहरे असर्गायाः धरेग्यति हितीयस्त चत्र दशा एके नत्र त्रसंचित्र मर्ग साहिकारामाक अवन्त्रिः कवितायनिवव्याः कवितामाः वधीमः तत्रहा समाजनः स्वीतक्षी तक्षावतार वस्ते श्री वात्वितिस्वया। गिति स्तिम्तिष्णाभ्याभूमाण्ड्यीम् इतवान्य त्यनः आधारिह्यतिम्ययेतं वा धेये वित्रीयः मार्थितिहासं स्त्रीत् तर प्रवर्णा नगर एके नित्त तेति तन प्रति है तत्ता है तत्ता है ति है से या नविष्धाये सविद्याति में ति देश विष्याति । विश्व के विष्याति । विश्व के विष्याति । विश्व के विष्याति । विश्व के विश प्रस्तिधनादितः स्वितिद्वासाद्वानः सम्भावाधिकान् नास्त्रात्वातः तक्ष्रतिकान्य भूनोद्वान्य स्वाद्वाद्वानः स्विति एमम्बोक्तन्तामात्वेनित्रमाद्वानः स्वितिवर्णायेनेपन्ताने स्वाद्वान्य स्वाद

संभसेति वणक रेम्ट समये इत्पर्यः इताता एतमा अंशतं नी विशेष्ट सं संभासम्बद्धान्य कर्ताना क्रितात्र सहत्व साथिना री कर्षेत्र स् हुतारे रात्री मानवित्र ता नारी हुति के क्रिया नात् स्थ का समस्त्र के स्थान सम्बद्धान स्थान स्थान स्थान स्थान स नै कुर्ति देशवर लायपाइते ताले नी द्रके ना देश इमिष्ण को तदामार्भ मध्य कि मध्य नम विति भने ए दिना ना है सुनी भावे सामानं यो मीवेन महावामा से वेस हिता विवाद ते तहवामर्थः समका विवाद क्षेत्र स्वता विवाद स्वता है । विवाद स्वता है । विवाद स्वता है । संभर्यायांकालेपुराणाक्षत्रमानिक प्रतिशंतकता सक्ताराक्षामान्त्र मान्या निवास निवास तेत्र स्वत्राणां स्वाम निवास के कि स्वत्रात्र के स्वत्र विकास के स्वत्र के स ति गर्भार वेदिनस्या इये का त्यार ने हिभवन : अधि गर्व हिस्स्यिपीय कार सदल ता क सहर मार्च क कार्य लायन सेष्मारिक्षोद्देयः बन्वसियत्रभवनेवराष्ट्रं गोननात् दिन्ना १ श्रीताकित्तत्वनिवर्षा कर्तियायाप्रदेषः सञ्च प्रविश्रामा विश्व देश हा कर्ता १ व द है ती सित सिका व वार्य व वात्र में वा विश्व व विश्व व विश्व व विश्व व तंसत्प्रवचरांगहवासे १५ धतमध्यक्रतेल्व हतीफलक्रक्रमाञ्चाचर विवर्शन वित्र तेताक्रमा तसत्यहण्यामहणास्य वित्य अवकारणास्ति होते हिंदी हैं है । इस माना ने नह नहीं लेख व त्रांग भेगा ने भवति हिंदी हैं का पालस्वाल संवैग्न शाहत वित्र तेन विविध के बाता सभा डेप्टिये संयुद्धिनानिया वत् तेत्र शाय नितालिय के विविध स

्र देधाप्रजनने स्तितिवहित स्तिरंगेद्रग्रं रज्ञविवद्यां स्वसायाः जतिवनाकाकवेती तिप्रसिद्धां प्रणे मध्येष्ठी जिल्ली स्वीतिप्रसिद्धा प्रते ते जाने व्याप्त ने व्यापत ने

त्रथं त्रतिः भारतितित्रवत्वावही कृते स्विताने त्रवित्वाने त्रवित्वाने व्यवस्थित वेद्यावित्वेद प्रदेष प्रमाय वित्व क्षेत्रके क

गरंदिधिद्रमधितारः उत्यह्म निक्समित्रिक्षणित्रानिक्षिति निन्निनित्राक्षण्या समिति निक्षणित्राचित्र के दिन्नित्र ते समित्रिक्षण्य समिति ताष्ठ्र पुरमे असे दिने देने असमित्र के समिति मनुष्ठाः स्नीप र षकुमले ने वोर्मित्र के स्वीरित्र के समित्र के समि ्वंतिस्त्रीक्तां समायं स्पानं वेचने वितित्रितातितात् वेचने हति स्पानं लक्षणि मधीदापालनं स्पानाविति मधीदानं सर्वे मीतितं अपि भामामाना सन्ते प्रते ताः प्रदादाः १ वत्र ता तिवक्ते लोकाना ह लेकि १ वन स्पानं १ विविद्याने विवि विकारण में मर्का दाना चनी विच्या मित्र निक्ष माने विद्या भिः प्रचित्र ध्या विकित्य विकार मध्या विकार मित्र भ्या या के श्रीपितिषा वाष्ट्रात्में रे प्रिवबता ग्रीध ना विवेदेता ध्यायः समये त्रयः ग्रात्मेय दे एम के निवेश रः अने का न्या सम् भर्मा जनम्यदे प्रात्में जन ने वेति क्रमान्ति मनाव मनशास्य ध्यामा क्षेत्रिम ने स्थार में हो। ४ कमार प्रात्मे र प्रमानमधायः विद्वासानिन्तितं मर्वादावालनं स्थानं मतिस्थाने मदनः । दोकाः दिति द्वीः पात्रले विववत्रादद्वनेः दिते द्वीपिट्मर्वारः स्ताः प्रकृतर्वयः एवंयवर्गातुः यवामानितितितः वतः प्रकृरातिप्राक्ताधायायान्त्र मेतः प्राणे र प्रियत मासीयुनारिखे केन स्वभेत्रयः गुन्तावदेष्ट्रकत्ते अंदन्ति प्रयोत्रत्ते प्रयोत्रत्ते प्रयोत्रति विकार्ये प्रयोत्रति विकार्ये प्रयोत्रति विकार्ये प्रयोत्रति विकार्ये प्रयोत्रति विकार्ये प्रयोत्र विकार्ये प्रयोत्रति विकार्ये प्रयोत नाभापनामानः यो नेवेता वेत बाद्विवर्षियम् येचका दिवक्रमा वयः सर्पे पुनस्याता धुवः ६ यानासरी व नित्री प्राप्त के नित्री भागवने प्रहाप्राणेक्टि लिला फेंप्यू में प्रमाण प्राप्त प्रमालमा व वरके मुक्के प्राप्त के नित्री भागवने प्रहाप्राणेक्टि लिला फेंप्यू में प्रमाण प प्राण तिलसमात्वा क्षिति विकास कि विकास कि विकास के अक्षिण निवास में कि कि प्रीति के स्वार्थ के स्वर्थ के स्वार्य के स्वार्थ के स्वार रणमह यातालं च्याव श्रवास श्रवास श्री र प्रोभवने के शा त्रेय र स्था प्रेय र दे र ते श्री भागवने

्विषेशिष्ण मत्ताक्षेष्ठे वावल्य क्रिक्त क्षेत्र क्

अक्टिएकोन्विश्वतापृष्टिः सानग्रहोहरेः कर्मणावनपेर्यत्र स्थानव्येतेनतनने तिलंती तिश्मर्वाद्यात्वनं स्थानमितिनं कतिवातकेष्वन्त्रपातः प्रत्ने कतिः १ सानग्रहानाप्रित्तका अविश्व स्थावणादि विभिः क्षेत्र प्राप्ति प्रेष्ट्रे विषय स्थावणादि विभिः क्षेत्र प्राप्ति प्रेष्ट्रे विषय स्थावणादि विभिन्ने क्षेत्र प्रत्ने विषय स्थावणादि विभिन्ने स्थावणादि विभिन्ने स्थावणादि विभिन्ने स्थावणादि विभिन्ने स्थावणादि विभिन्ने स्थावणादि विभिन्ने स्थावणादि स्थावणादि

त्रित्रहाम्यात्रां विक्रित्रहात् विक्रित्र विक्रित्र विक्रित्रहात् विक्रित् विक्रित्रहात् विक्रित्रहात् विक्रित्रहात् विक्रित्रहात् विक्रित्रहात् विक्रित्रहात् विक्रित्रहात् विक्रित् विक्रित्

let

तानारिवृपमाध्वेषाभय बहे हे वेदे बोण देवे तच्या हिना ना दिवृता बत् धर्मित बृति कर्ते तो ता ता ने वेद्वा त्यर्पं के गुण प्रमेण के गाविष्ठ क्या है ज्या है ज्या

हे हेथंउपादेव १२१४ १४ गण दे सा बिसि दी कें क्रिया माने के मान संख्या कर स्पनात १६ २१

वादिश्वातं विकास ब्राह्म केति वाद्याविक्र वाद्या वा

युनान ते ततः ख्रां किंद्र विष्ठ का गाः युन्य ते में निविष्ठ ति हिन इता द्याने यहा हो विष्ठ ति स्वतः ख्रां कु वे ते देव ते निविष्ठ ते किंद्र ते कि किंद्र ते किंद्र ते कि किंद्र ते किंद्र ते कि किंद्र ते किंद्र त

विक्र मिर्द्ध न्यान्य निर्माणे त्रिप्रमायातः १० २२ सनः शत्र नवः मञ्चर् १० त्रीतमहिल्लास्ति २० २० १६ प्रमान्य उ र त्यावना दे तिस्त्र नी शप्तनं २२ १० पादै द्वादि शतिव स्ति हत्ता र त्यापा द्वादे त्र त्यावना स्ति त्यापा स्ति तरे त्यावना दे त्यापा स्ति विक्राति स्त्र स्ति विक्राति स्त्र स्ति विक्राति स्ति विक्राति स्त्र स्ति स्ति विक्राति स्त्र स्ति स्त्र स्ति स्त्र स्ति स्त्र स्त्र स्ति स्त्र स्ति स्त्र स्त्र

नंप्रतिन्त्रविष्ण्वा य्रियानाह् गरिप्रित्यादि हार्डिन आधिनतरं वन की तत्र यं विश्वासी गरिप्रिति था तेहिला केत तपरीता वां ही नंप्रधान मतारे तिविधाः मतावस प्राष्ट्र में विश्वाप्त ने विश्वाप्त में विश्वाप्त में विश्वाप्त में विश्वाप्त के विश्वाप्त में विश्वापत के विश्वापत अध्यत्व न द्विशिति प्रामित संग्रामा अववादि कादिवे विश्व है हिन्न है विश्व है विश्व है विश्व है कि स्वा है विश्व है विश्

संग्रेमाग्रामावस्य स्त्रां माने गाये क्षेत्री वित्य विवय विवय स्त्री त्रित्र वित्य क्षेत्र स्त्री त्रित्र क्षेत्र स्त्री स्त्री क्षेत्र स्त्री क्षेत्र क्षेत्

मार्ग मिन्न में इस्ता धाराण धर्मकाव ता नादी ना वित्यादश्व कि विश्व मिनिता ने स्विता वित्यादिश्व कि विता ने स्व वसादी में ने असि मार्ग का ने कि आन्त या या या विवा वा वाद स्विता है है को अप वा द स्रत्यो रेव न वे वे स्व के दि को प्रया ने स्व के स्व अवसमानारे सदनमणार हेके परेक्कित सिंद्रः हेके परेवानि द्वारः सँगमाने उच्च पर्मात्रः १ वचा स्वर्धे स्वाप्ति देवे स्ता संतो एक्नास्तरः संगा संगावित्वर्धः तेवाहि सिद्धादिक्षितः स्वाप्त स्थावित्वर्धास्त्र स्वारं स्वारं स्वारं स्वारं अवस्त्र १९ स्वारं का ता त्रात्र का का प्रदेशीय सिद्धा स्वाप्त स्वारं स्वरं स्वारं स्वारं स्वारं स्वारं स्वारं स्वारं स्वारं स्वारं स्वारं स्यः कुमितः स्वत्रद्रग्यया त्या नातरेपोनको त्यतिनेवक्वा नक्ता धनः सहस्रको सहस्रका त्राप्तः न अस्त नवे सिति कापामा चितेत अस्ति वर्षात्रका भीते दित्रमा भिति अभीव नित्रमादिना ५ १० स्वरिष्टे क्रिजा मादी प्राप्ति नित्रमा

14

कर्मतागाविकात्रप्रादिश्रमः १८ २

हे यो मार्ग विद्यार स्वाप्त प्रमुख इवत मिछः व द्वा क्या व ताः प्रमोवर विद्या मना ४ १८ स्वरु एन प्रमुख होत्र में प्रमुख मनम ६ ग्रापिक स्वाप्त मार्थ यो स्वाप्त स्वर्थ स्वरूप स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स् येः ध्यातुः क्रियामामा १ १५ तत्र तत्र तत्र तत्र क्रियामः जातेः जातेः १२ प्रीतिमानिकं मत्रेयस्य स्वत्य स्वत्य स्वति । नारिसंग्राट्स्त्रतं गणाविषयः विनस्य नृत्यागातिग्राः । अग्राप्तिगरिताभिति । प्रमानि । अन्यस्य स्त्रें न्या प्रमानि । प्रमानि ।

सर्वत्र तायदा प्रवास्ता स्वत्रसारं ज्युं देवति तार्देव स्वाहेव देव स्वाहेव वे प्रवाह ता का वे प्रवाह ता स्वाह स्वा

वा अस्या मापा किता हैं यो प्रयोगः मापा नय दृत्यने नमा वा प्रयः मापा हि नया प्रवृत्या नि गर ते नत्य प्रवृत्य प्रयोगः मापा ने स्वा प्रवृत्य प्रयोगः मापा ने स्वा प्रयोगः नि दृत्य मान्य प्रयोगः प्रयोगः मापा ने स्वा प्रयोगः नि दृत्य माप्य स्व माप्य स

त्रक्तः प्रतिदेवमिवण्यस्य एकि। तिस्ति वास्तिवेगारि तमाप्रेत स्थाप्य विश्वेत प्रति वास्तिवेगारि तमाप्रेत स्थाप्य क्रीतिः संगापास्य तेषां प्रियम्भातात्र मान्य कर्मनिष्ठात विक्रियावः क्रीयं ते ना स्त्री हुज्ञ नविक्रियः १ अण्याय विक्रियम् विक्रियावः विक्रियम् क्षेत्रकेष्ठ न्यायां माह दिक्तिरियार मे त्या देवा है विदेश है विदेश हैं विदे कता स्वास्त्र निवास के विकास के विकास के स्वास क विस्तानम् विस्तानम् देशः कातः स्त्रायोः संगदिति विस्तार्थः एत्रनात्ये रच्येत्रदान्ये स्वति विस्तानित विद्यार्थित व्यसमार स्वान्त्र मान्य के विष्य के विषय के वि

वहदेवायन्त्रं वेत्रमान्नानाभिदेवमो अअन्वेद्वारवत्यं वारदानद्वामानः ए विक्वारभ्यर्थनादेवे न्ववित्यद्वन्व विभागन्यमे त्यन्त्रं विक्वार्या विद्यार्थं ववदीत्री न्वयेत्रहा हावे केवेबके हिशा हाहिथात्री स्वतं देक से केवे

नार प्रमान को बेंच हिला का. प्रमाहल पर शीना

क्षाध्या गर्पसंहिताति वत् वितारितारित जिल्ला विशेषाति क्षेत्र क्षेत्र प्रमारिष्ठ त्र प्रमारिष्ठ त्र प्रमारिष्ठ त्र प्रमारिष्ठ विशेषात्र क्षेत्र क् वेसी नत्रित्रं प्रमानतियः स्वासंसातित्वं पण्यानी विद्वास्त्रं स्वामान्यते एक त्रित्रं स्वामान्यते स्वा

र किमणः श्रेतेवधः नप्राधित व स्वा द हेविवाहे २२ शार दंवे क ला सतं विद्या द वंदा वाशी त्राधाँ द ववी वधः हिरि के ति हो नत हिने ति उत्तर त्रामग्रहणात २४ पराभवश्वादिया देव्याकः साधः २५ शिष्ण्या त्वादी हिरि तेव व वविधि प्रवास्थी प्रते हैं देव व त्रस्र हिर्माणु न धः मृत्रातः सीक्षणादेव स्वतु स्ववोर्व धः एवकि ने ध्यायश्चार्यर्थः व त्वला देवश्चर २० त्रादा मिनामग्रेत्रा प्रवास मिनामग्रेत्रा प्रवास मिनामग्रेत्रा प्रवास मिनामग्रेत्रा प्रवास मिनामग्रेत्र प्रवास मिनामग्रेत्र स्वत्र प्रवास मिनामग्रेत्र स्वत्र प्रवास मिनामग्रेत्र स्वत्र प्रवास मिनामग्रेत्र स्वत्र प्रवास स्वत्र प्रवास स्वत्र स्वत्य स्वत्र स्वत्य स्वत्र स्वत्र स्वत्य स्वत्य

श्वनित्यर्थः वता श्रीतिवक्षणं नेदादिष्यण्यनेच मृतपत्राणं केवताः प्रदर्शनितितिले नेतं श्वतदेवस्य वित्वकाणन नकस्य गिर्वणेत्र तेनेनसभग्राहाणं देवत्रविभागः सत्तादिण सेः २ द्रातश्रीभागवतेमकापुरा स्तितिला दिकाः

21

एवं रश में अने कारशार्थ मह अक्रितियादि यथाया ना में कृति शत अध्याये कृति शत्रामा निर्मा ते किता ने किता ने किता पारितितिक्तामं अप्रकाराम्बिमाग्र मार बन्नेति क्रांति कर्म मानेता धने तन्नातः करण प्रक्रिकाराकर्मण मारा देवका रकते क्षापंपति। कर्मा क्षित्रानंत परमागितित्वक्र वात्रात्र साहात तात्राद्व हिर्वे व त्येष्राण्तेये नष्ठ स्वते र त्यक्ष तिष्णप्रतालाचे विवस्तात पंचा धार्या स्वयो ग राष्ट्रित प्रथमाध्यो यार्चमाह में बेति तत्रा राध्या प्रयम्भित लिय प्रयम् विविष्णप्राहित प्रत्येषा विश्व पाण्यं का नामहित्रहाव लागाना मावत्या दिता नाम विवय द्वाक लागा विश्व साम निर्देश गमने स्पेत्र प्रत्यक्षेत्र शाक्षेत्र कुत्र अगयद्या प्रचात्र स्वयोग परीक्षमत्यकि विशे श्वत्र धनाध्यापारी क्रिया

क्रमताराक्षधाण्य नाष्ट्रचार्यं मेंग हाति कावन्याद हो मानों प्र हो। दिनीय चला सत्तीय एकं चने के विषं चने रोपे ववन र्ष एवं रव प्रसाः ) ना लिखाः श्लो ने वार् ला तृति ले त्र प्रमान निवास ने व प्रमान विकास ने व प्रमान विकास ने व मागवतान वर्षात्रभागवतान्वप्रवृह्णकान् तर्ववत्रव्यामाण्यात्रस्य वर्णहत् अवतागाणामात्रमात्रा अभक्तापित्रभक्तः विष लित्रात्रात्तिव्यात्रिकार्यम् आवस्याः तो त्रात्रेत्रक्तः व्याधिनास्य भवत्राः स्वयं प्रत्यत् ४ त्रयं त्रमान्यादे त्रवराण्या ह सर्वक्रमाणाविद्याभागवते प्रतिगत्र त्रात्रेव्यवविद्यात्र तेमाग्वतः यमान्य तिष्याभ्रतस्य स्वयं प्रतिम्हाना वेद्रवरः दृश्य जातमसङ्ग्रात्मातस विविविवर्षय साम्यवि प्रश्नी य युक्तास्थितिक रात्ति मामाया ज्ञेल्य यः भ द्रोस द्रोता स

चत्रित त्यादेन वत्रिः प्राव रंगस्य दिनेपाध्याय त्यवस्ति विषय हत्य के देनातः यवत्र संग्रेत के विषय प्राव त्या स्व स्वतृष्ठि हित्र ना स्वत्र प्रिति के प्रेति के विषय के देश कि क्षणः एवं प्रवार के प्राव के त्या के त्

चवितित्रातिः शक्तेः सम्मिर्जवितः क्रमात् कंस्मीभी किनः कर्मारे वक्षां तस्य संभवः र जातस्य मे कुन्योपिः विद्रोक्ताकं सभी प्रेनः बन्ने क्रमेन्स्य सम्मिर्जन के प्रेन्द्र समित्र समि

वर्षणीत्रात्रे पार्वे अन्या है के विकास है के विकास है के विकास है के विकास के विकास के विकास के विकास है के विकास मात हति हिंद स्मान्य ने परंगल भते प्रकृति वे पाने वे के प्रोच को प्रमान के विश्व के प्राच्या में प्राचित के प्र ति के अक्ट्रामान प्रमान के प्राचित के प्राच्या के प्राच्या के प्राच्या के प्राच्या के प्रमान के प्राच्या के प्रमान के प्राच्या के प्रमान के प्र

संभोगितिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकारितिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विव वनस्वानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार्विवानिकार् हरतं प्रामासम्बद्धः कार्तिचादिविवाहभामहत्ते दुआहितः २२५४

办

गामिनीवे बें जा राज्य स्थान है । से वें प्रेन् के स्थान के सम्भाव के स्थान के सम्भाव स्थान के सम्भाव स्थान के सम्भाव समित सम्भाव सम्य सम्भाव स रध्यायानाहं के छोड़ितादिना यग्भितिः प्राभवः स्विनाण ख्रेतिचकाग्रद्येषारान् १ ज्याद्र रात्मान्यनं स्ट्रितिकाशाताने दिन विकारः सन्पूर्वा थ्या वातस्या प्रामाणित् विकारः सन्पूर्वा थ्या वातस्या प्रामाणित् विकारा का निर्देश्येष्ठ ना उपरिश्व के ने देदाँ दिन निर्मा के ने दिन यो ने ने देदाँ दिन निर्मा के ने दिन यो ने ने देदाँ दिन निर्मा के ने दिन यो ने ने देवाँ दिन निर्मा के ने दिन यो ने ने देवाँ दिन निर्मा के ने दिन यो ने ने देवाँ दिन निर्मा के ने दिन यो ने ने देवाँ दिन निर्मा के ने दिन यो ने ने देवाँ दिन निर्मा के ने दिन यो ने निर्मा के ने दिन स्वाप के निर्मा के ने दिन स्वाप के निर्मा के निर्म के निर्मा के निर्म के निर्मा के निर्म के निर्मा के निर्मा के निर्म के निर्मा के निर्मा के निर्मा के नि ततालाः देशस्य परितातस्याह तिरात्रव ने २२ ११

नविषये न्या सः तेपण विहंदेतिदेवीवंबाक्षेत्रीत्वाच हिंदेशेकिकाक्ष्य ज्ञानात्रे मेंकिक्षातिव रेश सा न्यात्रे के प्राप्त विषय ज्ञात स्वर्ण गलान् धापनी १६विक्तिलारे वस्तिएति १५तंत्रक्तिममभूके वितेषी इस्तान्यली नार्विष्ट स्तान्ति सेन तरे ने यो तर के जिल है। जान का तर है जान का तर है जा कि का के प्रति है कि कि का कि का कि का कि कि कि कि कि वकासा किय मंभड़े देवम स्मा ने तर्भ त्या वेद है ने का वा हुए सि के हुए पर वेद है ने देव में ने ने ए मर्क मुना वितिने तर्श्यमण्यायलियायलीयात्रीयतेथना इरमयति वित्रे वित्र या अस्ताहे तया विदेशकाति व अये यद्वाविभवत्रका लाहिशतेशतं मणीव तथेत्वं स्वामात्रवाः इसा धारिकारिकमार अष्ट्रणामामनात्रकिको राताकुबान ह मालाकते प्रेशानवमी तुलस्या करपी उत्रे ४८तिष्ट स्वत्वाचेया व्रक्टाः प्रस्थाने माल्याः माल्याचाचे मेक्यामागवायामा ज्ञानाकी वर्षातिली यु भाषा मिरे इपदर्श के वे सुद्ध म बापसः ४० मा शिकान् विसात ने मिन्यानियासदा विकाल के तर राजान्य से नी वर्त ४२ तस्पन्नाम कुदीभत्तर्जभित्रियावलः विशावस्कृतदाने नवानीव्रमतिसद्य ४६ तदानेन कक्देन संकर्यः कतत्वव किलो विविधानी असिव विविधानि । महा विविधानि ना यथा स्वा कि ने विविधाने के ने के से सिविधाने के स मदेश अर नोतेषात्री वृद्ये सातिकन्याय द्वायने हिए मुक्द ३ वाच यहिर यह द्रोति विष्ये ह ने निते व्योग प

मंचेत्रवदः खंभविष्कृति प्रचलमंत्रहेवूंबाति क्यातंत्रमत्रायते । धं तल्यातः मंबरिक्याति प्रदेशवित्रमत्रायतं के प्रस्ताः कर्यहेकुंबा देशवित्रमत्रायते । धं तत्रहेवतंत्रम् वाक्यात्रम् व्यवस्थाने । ध्रित्रहेवतंत्रम् वाक्यात्रम् व्यवस्थाने । ध्रित्रहेवतंत्रम् वाक्यात्रम् वाक्य स्याः साचवाद्वाताः तते १६ तियक्तात्रप्रतं यक्तं ना वेकात्रकात्रका यतः र विद्वान्यवं यक्तं ना दः येत्रवाद्विक ते । स्थितिक विक्ति विक्ति है ताति वेदनेवदत्ती प्रवेति तारीनिवति किता कि प्रत्रकार के तर एति विक निल्यो १८ रितर विश्व मिल्या मर्वा विश्व के ति निल्या हिनाने नित्र मित्र रे सित्र रे स्व सित्र रे सित्र विष्राविक्ति हिएशासरं केरोतविक्षेत्रिविक्तस्य स्थानिका २७ प्राप्तः स्थानिका स्थानिका कार्तिकम्प्राप्तियक्षेत्रविद्यां स्था द्वार्तिका एक्षेत्र युवदः सोवर्तित तलस्या स्विताहंकारव विदेशित त्रवत्रक्षावेत्रविधवात्रभविद्यात्रति द्वार्तिकावित्रवेत्रके स्वयन्ति न द्रभवत्य विद्यार्थित्रवं धर्म समग्रवातिदशस्य । विमेननेन विशार्याके विशार्याकेन वर्षान वर्षान वर्षान दिविशोर्यान दुने विने वे निर्वेक सिके मारि किशा रिक्रवनायन जातः कालेगता वाला रहा मार्गि विलेक रूप दानि के पार्शन लाकाक्षेत्रहासकाः गतस्याससंस्थान नावसामिति। वे सेनिस्तरपुष्ठि द्वातीनिस्त्रितिष्ठिति विक्रोलितांत्रपहंपेतिष्ठह कालां हुकणा २२ वया हिसीया चेडस्यदर्श तर सकता जताः तयारा द्वारेस्कलाननाः ३२ त्रिमेषमात्रम केल्र खा स्थितातवालकाः मधिकं वर्णने येत्रसंत्रः

एवंस्कं भारति हूं या ध्या या प्रमाह यहारि यादिना वंधी की उनसा या है। नक्षः या मन्त्रे में सु सन्ते में ने ता न विषये ज्या सः तेपएं समुद्रातिशक्षःविषयात्रेषःद्रोणेतिशकः स्त्री वेत्रोह नी वे स्ट्राति नात्रवैवववन स्रातांक्षा प्राप्ति त्रव्यः । रणः स्रातात्रव रेक्षेत्रवरिक्ताराक्षेत्रक्षात्रवहावद्वाद्ववहात्रक्षात्रधात्रवग्नात् वृक्षादस्क्रावहात्रक्ष्मा विस्त्रहात्रक्ष धाय नव के विविषयि तिकास यम स्वास प्रकास प्रकास प्रकास के विविष्ठ के के विकास के स्वास के स्वा

, याहा है भे हरे मी से प्राप्त के मित्र के में देश में विषया में हरे खी में हिए भार राष्ट्र के माने हो हो हो सम कारिये वले जित्र के क्रिया हरे जे मार्चितावले। य वले दिस्ता हरे विदिश्ता वर्षे विद्या हरे वे विद्या वरोवला इतिक्रीभागवते महापरा गिरित्लाको इनक्षेत्र वत्रविशत्याकीशानु सीतिन दिशाभ पत्यस्ते महाप्रकार

शारयाः वयं रहतोतिविक्षेणेनतक्षेशानकीर्नने इलाप्रबधुः शायितिद्वश्वीतिविष्रयाः २

ऽण्यत्वमस्ति धार्षमात् नवमेबेति वर्शवंश्वमर ध्यायानायत्। प्रमातिशायध्यापी किंति देशा नुसीतिनेत्रतात् दृशाऽमा त्ना दृशार्यना नः तन्नातिरामकरशाद्धः स्वयमीशाः १७२ये वृतिविद्यागादीशालेखामीशानामीशान्यस्तिनेवक्यार्शान् कथ्रयर्थः नानेवार इल इत्यादिना इलः प्रथमे ध्यायेतिक्षके रूपर्यः ध्वनेविष्ठः विद्याद्वातां स्ननेविष्योतितेववयमम क्री स्रविषयविष्णिभिक्षवुर्विष्यभिक्तः पंचमद्रायणः २

राष्ट्राश्चासम्बद्धात्र राष्ट्रमामस्य कार्याराष्ट्रदेशः विश्विच्छोत्रन्यः १० लः प्रस्थवाः ग्रत्नानामदग्यः वर्ततः कार्तवीर्यः ल अन्माति आ निविद्यात् स्रियमात्रे अर्त्वेनव धामस्य ने वर्ध प्रतिवार्व धामके का नविषे हैं होते अन्तवात् अर्तिनवधीश नेत्ववरशे सित्वरं सेत्रवर् सेतर शहर त्र व्या से त्रांभगीविभित्र वेदा वर्ति व स्वर्शे प्रवास्त्र भित्र हो। सेत्र रेकोनविद्रापुरः प्रवेशः वंशाविश्वारीतिरापचारात एवपद् हियोः जिति पूरेपद्ति पृहेप स्रामन साह दे कि नी निद्रा किति भरतः रतारित : मीह्मः शातनवः एने पुरु वंशेषु धानतात त्रिषु विशादिषुत्तः व रेतः व सम्प्रवण धान्या गुरु वंशिष्ठारा । व स्वाद्या धान्या गुरु वंशिष्ठाः व स्वाद्या । व स्वाद्य मांधाराव कुर्वेद्राने साम्यामा प्राप्त के स्वाप्त के स्

त्येत्रात्रानाध्यः वाप्रकार्यम् व्यात्र्यवर्श्याच्या राष्ट्रीत्रक्षात्रः प्रमान्त्राक्षात्रः क्रमान्त्राक्षात्र नाः द्वात्रीभागवतम्भगगगान्यम्बाधः भ

विश्वितित्वतं त्राधा मंबे यो वित्र क्षातित् गृता क्षाति न ने वे वे दिशातिर व एः न तक ति खाइत्य तन्त्रा र रामावित रामप्रधामप्रमादाशारिजामद्ग्रीपेयातिज्ञावरीचप्रजातियरिववारत्यातिष्ठातेयः हियमात्रमित्रतित्रित्रमित्राहेकतित्रदेशिया वर्षेत्रः यक्तामायको काया कि विशिष्ट्या यति एते कि ग्मार्घधननम् प्रविण्णाद्यक्षत्रवर्षित्रवेषात्रत्रके देकमण्डित्रत्रामण्डित्यक्षत्रामण्डित्यक्षत्रामण्डित्यक्षत्र विश्वित्रवादश्वित्रवादश्विः सूर्यवेश्णारात्तानः एकादश्वित्रित्वाप्रवेश्याः स्तिनवेशस्य निद्यात्रवात्रात्वात्र वीजार्थ भ रतिस्रीभागवतिहित्तिलायात्रवमस्ति थः भरम

नापम्दिरस्या तत्राद्कारित्रातेषः स्योगभवद्रविनि स्वितिस्त्रास्त्रतेतिव त्यामंतिकविवित्रककार्या नायमानारित्रावह्यायी तिष्ठियः प्रविद्यामवरमा स्ववनिक्षाव विकार स्वति व स्वति प्रवासी स्वति स्वति स्वति स्वति स नेत्रिक्रोतिरर्थकः तेनानानात् रानादिव्येमाविद्यानेनिव्यित्वार्थस्याविद्यानिद्यानिद्याने पित संग्रेक्षेषु मनावत्यादिव्येखाधिमनी प्रनाविता ना स्वतिता ना स्वतिवाना स्वतिवानिक त्रविवर्धि हे मण्दितावे वितदात्रीय जेने एकारा सा अध्ये मार्थकार हिवार है कि स्वतंत्र सर्वेशकिवित्यर्थः शक्ति हासे हिपार ने स्थान त्यांच्यान्त्रण्यक्तेचे यण्ये न्युगापात्वक्षक णेसर्वत्तिसर्वप्रक्तिवेचरात्वा ह ते नेवसास्यायात्वय इति श्रादिकवयव्यवस्थात्व त्याहरण हामाव्यविद्यात्वे व्यावित्रक्षक रूपेस्यक मादिल व ला सर्वप्रक्तिच्य से ने विसारितवार पद्वितवार नद्विहदास्य लेका जोति सर्वः तथा चत्विति त त्री हर त्ये उपवंशाशिष्ठ त्र शंब्रह्मा द्वां प्रत्य नेद्वता ध वे वे वे त्या निव प्रविश्व निव वे वे त्या में च वे हे त्या में च वे हे त्या दे वन्यास्यमेव नानातिसर्वतत्वात वितन्ताप ने नत्यात् मुखंनिय न्यायाति यत् यत्रमी व स्वत्ये स्योत्रसद्याविष्ट्यिति इदानियाति तित्रक्षेत्रके नियु वित्तन्नायायाः सर्विनात्न तात् नेपाचभगवर्गता . जीताष्ठ नारंत्रकाशः वर्ष खवाजमायास माहतः महित्वाभिनानाति ताकामामन मखवातिति ब्रह्महामा तितेतरंबरनकारिणिक वेचदर्शयति तेना वारि हदानित्यादिना ब्रह्मणावसे बत्यालके वृत्तेद्व करणामीका विवस्थिषुत्रातिके खषहते व्यवज्ञी करने प्रयाणा वसत्या सकत द्वकरणाक्षेत्रस

सर्गः प्राद्भेदो . तनधीरेष सः तत्र र छातः ते जा बारि भदा विविध छोष्य पति विवृद्ध तत्र चेतार ज्ञाभयपा व प्रणाक् मयार ए। भेतिकाः के ने भगवता र ए। यूने तिका इति विलेशा सा य प्या ब ब स्वाल में है। युक्त इत्य पें : यूने भगवताकि मित्यन्य रेष्टा ब्रह्माणिक तीना में बाने ते या का दित्य ता है सबिति मर्वणं स्वासित्य ता ने यासमित्यर्थः तथानवस्यति ततः कछो। तदं कन्ति तमातः गानका स्यव उभयपाचित्र मानमात्रे व कैवि स्दोष्टरितिषात्रावप्रवे। द्रह्मणो असंतावः तर्यां वत्रात्रात्रात्रात्रे स्त्रां वर्षेत्रे विचार्या परमकारिता केन्भगवता त्राहर क्षाइत्यर्थः वनुमहामायेन ब्रह्माणायि हिता मायां के च क छो। तान वान ता ता नाकि मिति सां ने वा ने ता ह शोष रा डो का यहा वित ना दित्या शंका या मात या मा से नमय निरम्भ के काम ति विरसंतिग्रकतेक्रकंकपरं ब्रह्मएएक्तेमोहनं तिनित्रित्र वोषादिकं चयेनेति तथातं तन्ते तथा नाविव । यदिति स्वर्षणा संवित्ता वर्षणा अत्वेतस्विया अकत्वसद्वसत् अवस्था वस्ति स्वाया स्वाति यगाप्रभावनेत्यपीः तथाचा तथा मिता तथारिताने ज्या हाता आकारति सर्व मनव है एवं वसविष्यते नच मानद त्यः सर्वतः सर्वशानिः सर्वमाहनः सर्वस त्यत्रदः सर्वापरा प्रसार छः सर्वा स्राप्त का विस्पानरम् स्रोक्सामितिसा ने वनते ने ते प्रण प्रण प्रतिय चित्रं विशेषण ठारा विशे

म्मद्रसम्भारति संवादिता कि प्रस्वाव प्रमाण देव विशेषितं ना गणा कर वेगु समितं प्रमाणि है । स्माणि विशेष स्माणि स्म

दारत्यत्रत्राक्षाक्रदेग्द्रवादिश्वर्थम् तस्यदेवप्रशिधस्य ग्रहतिक्ष्यं वर्षात् दिनेष्वं वर्षत्राद्वात् वर्षात् वर्षात् वर्षात्र वर्षात् वर्षात् वर्षात् वर्षात्र वर्षात् वर्षात् वर्षात् वर्षात्र वर्षात् वर्यात् वर्षात् वर्षात् वर्षात् वर्षात् वर्यात् वर्षात् वर्षात् वर्यात् वर्षात् वर्यात् वर्यात् वर्यात् वर्यात् वर्यात् वर्यात् वर्य

प्राक्

त्वनस्त्रीत्वात्तात्ताः उष्टामित तक्ष्वलाः अएका विष्टा प्रवानितः विदे तेष्ठ विदे तेषठ विदे तेषठ

इक्रमार्थितित हेक्टकलहा निष्यः चतुः स्नाद्वित्र हाय हत्ये बिनयो जयः प्रारु निकामसकाम्याभितिभोजा सना इयं उक्षेत्र विकर्णसना कर्मस्यानित्य

त्री

आक्ताकारेभीविक के यहि धर्म वादर्शनाव । विकाले हु एं ते नेता वादिक का नेता वादिक हु है ए वं बा वादि रेपा गाम्यायायाद नार्वा प्रशास ने पाचे दमनु मानस्थिते मामिन महापि हिस्सा तर्भाव विति हिस्सा तर्भाव विति हिस्सा ने प पामि देने मानु दि ति सुद्द हो वे ने पाचे दमनु मानस्थिते मामिन महापि एवं स्वति विति व स्वाभिनां दर्शायित हा विवाभिने दिन्ने मदमावव संवत्ति मामिन स्वीम्योगम्यायिति समस्याभिः एवं स्वति विति व स्वाभिनां दर्शायित हा मालेन्ड्र दिश्व के कि नरेंचे नमदार्थ नेपदार्थ ने देव के का के कि का दिला माने के कि का के कि का कि का कि का कि यो स्तियं ने दिश्वार नवता विज्ञातिय व्यविवादाएश मने नित्र हहात बुवा युका नित्र चतर्त कुता क्रिका ला परंशायसितं त्यारि पृश्चार्डन जन्मा ग्रायवार्तिनायः सासादेव दिश्वाः अन्ववादियानेन तस्र न्यापिते । प्रायवाद्या विकास वितास विकास वितास विकास वितास विकास व्याच्यामस्थान व्याप्त माराव्या कलापः स्वित्रहिष्ठमन्या ध्यापाच्या स्वतः १ तेज्ञा वारिस्याभिना स्वित्रहिष्ठा विवाध स्वति तिस्त्र विमाद्या राज्या विकाद स्वादस्त्र ना साधना द्यावार्थः द द्या आवेत्र स्वाद स्व क्रिक्सिक्यियार्थः ७ अविधानलावित्र हेयलित्र वरमार्थर स्वाव नेवान स्वाव स्वाव स्वाव स्वाव स्वाव स्वाव स्वाव स्व तितिसमार्थाभवाने यरमहिमानं वे दंतिवा कार्यिति दिध्यामनित्व नति त्व त्या पार्या ना तनता व वृत्वात एवन ध्यापनात्वनत्वान यान हात व्यापना न वर्ग्यादि सर्थः तेने ब्रह्म हृद्देखादिनाह वितः तथा चुना व नीवर ीर्ग नभू वेवेंहे हितेतिरिष्ट्रिंत ल्लान क्लाभाग वत्या स्थितं त्रणा चमत्यपुराणे प्रशाल दानप्रस्तावे यत्रा

िक्र मा जीवणिते धर्मिक्तरः राजा स्वायाचे तेत है भागवते हिर्दे के माथ स्था के व सत्ता के ने नत्ता के नित्ता के ने नत्ता के नित्ता के निता के नित्ता के नित्ता के नित्ता के नित्ता के नित्ता के नित्ता के व बत्ये वं वृह्य अवा पा निम्नित्वानि तेने वृह्य ह्या युजारिक वेषे रायनेन भक्ता नुगर सहाले वाता वाष्ट्र स्व ध्य माधे मुर्गित य स्राया त्याने न का में जा स्वास ना ने पा के ति सम्मास्क ध्यात्या द्या न ने वर्षा न के वर्षा मनवम कियप्रमेषेत्याद्वं मध्यावातभीते ते ने ने बाति प्रदावि निमयदि तिना यो देशा प्राचित्र विश्वास्त्र ति निमयदि ति नि निमयदि ति निमयदि ति निमयदि ति निमयदि ति निमयदि ति निमयदि ति निमय विस्म कर के हिंदिन कि देश संधार्थः स त्यपरित्र विद्या कि पार्थः प्रिन्दी त्या समेप देन स भवागादिएकारी अग्रमसंधार्थः सत्येप र ति नाज्ये के के ने ने ने कि नाय ना नाजा ने स्वारित यस्तं धार्यं दिक तत्रभागवाग्यस चने तदेन ह्या खाने मायिव दित्र तो चूर्वते सालता स्वर्णियति चनी दत्र य चम्हाभतेषहितंश्रु इचेत्रवेतद्विमानेविरा उत्यापित्यं हो कित्यतिह इदिन व्याख्ये एवम्बेची क मवंचमहाभत्तेविहितं श्रुद्रवेत्ये तद्विमाविहिराष्यग्रभातेषात्रित्यं अन्तानेतिस्क वित्रं तिवारवा वृत्रं यते एवं एव तिस्क वित्रं प्रतिवारवा वृत्रं यते एवं एवं तिस्क वित्रं तिस्क वित्रं तिस्क वित्रं वित्रं तिस्क वित्रं तिस्क वित्रं वित्र सुने तीरेका हुआत्र विद्यायने सुन्वित चेत्रंय सर्वान स्थ्तं सन्तांत्र सहसादियर मान्य यन स्थित कर्षा र तिवासदेव प्रतिवाख्या वने संबर्ध ए यह ज्ञानिर का नांभित वासदेव वर्नन ग्वाधारिक व नेव स्विति व एत बन प्रताय नीया नरभागे बारवान के सीता उत्ता ते न ती विक से स्ट्रेस है हमें बी नसा हि जिसे मिवड्कताभावेन यत्रचासदेवः श्रमामावक विणामीवः प्रयुक्तिमनः अपिक्द्रीतं कीर्द्रिते

संकर्षण

गमादिकिये स्ववति स्तीति स्तीस्त्री धुवोवालः एषः त्रीरः प्राचीवविः स्ववः भीमादिव दृतर लीचः स्ताने नाः विश्विषे स्ववति स्तिति स्तीति स्ति स्त्रीतः स्विष्ठिः स्ववति स्ववति स्त्रीति स्त्

सतीध्वरप्रशासिक्षित्वा विकार्ति विकार्ति विकार्ति विकार्ति विकार विकार

प्रमणः धुवायमेव पविद्यानाद्वं यहुवं प्रचलं यदे तम् विद्ववे यर् १ द्रीट माह प्रवर्ति व यवे एकाः प्रकारं स्तारी स्तारी मात्र या प्राच्या या स्तारी व स्तारी या स्तारी या प्राच्या या प्राच्या या प्राच्या या स्त्र व स्

धीक्रामावध्यामाने तियोहित्वध्यामने तिव्यापित्यणीः उपहो प्राची नवाहित निधिष्य प्रदेश निवस्य विनामहितस्यामन । प्रदेशन स्वयाध्य पर्दित्य विनामहित्य प्रदेश क्ष्या विश्व क्ष्या विश्व क्ष्या क्ष्या

ध्यान्नोतिनार्नामेयापि स्नाविनातानः २४ कालाप्रिभाति स्तर्धितिनिति हिवयप्रेय प्रदेनना देखार्या नं नयः शिद्धः प्रवेतस्त दन्तिनया प्रतिनीतिन्धः प्रयोग्याया प्रस्ति प्रयोग्याया स्वार्थे स्वार्ये स्वार्थे स्वार्थे स्वार्थे स्वार्थे स्वार्थे स्वार्थे स्वार्थे स्वार्थे स्वार्थे स्वार्थे

इमायसंहारिति ययिष्ण्यां नविध्य प्रेतः प्रवेति स्वित्ति स्वित्ति स्विते तथाविष्ण्यी नविध्य क्षेत्रा स्वित्ते स्व अश्रेष्ट्रं कृतम्बद्धात्मयोत् स्वातः स्वात्त्रस्य त्रदेशिकारे केवयो स्वात्य वेद्यातः विद्यात्मय क्षेत्रस्व क्षित्र त्रत्रे स्वात्त्र स्वात्र स्वात्त्र स्

विताक देश हो हो हो है। इस के प्रतिक के प्रतिक के कि एक प्रतिक के कि एक प्रतिक के प्रति के प्रतिक के प्रति के प्रतिक के प्रतिक के प्रति के प्रतिक के प्रतिक के प्रति के केर्यक्षेत्रकात्मान्ति अवित्र क्षां कार्यात्मा एकालात्य क्षां विवादिति स्व प्रवेदानि ते ति ति व प्रवेदानि ति व इसके ते नाव्यक्षः स्ववंद्रोतिन विवादि श्रृतेः संदेद्रिव पर्वाप्ति विवादि विवादि स्वतं नाव्यक्षः स्व नाव्यक्ष काश्रुवनरण्येन नार्ष्या विस्त्र के व वस्ति विस्ता भी वात्र स्वत्य व वस्ति वस्त काराक्षा वर्षा वर् त्ति नुगारता निवनिव विद्यालिन विद्या विकास्य मा हरे तुना दर्शाय निवास विद्या विकास व

34

ति जारिभतं वतां ते खं रसानं दर्घमा स्रमूर्णः तस्वयः प्राणिक्रंच मवयवग्नाविति स्रर्णात् निति ताल में हैं के ते वे प्रमान के ति के ले के हैं ति वित् वित्र वित्र के ति वित्र न्वतद्भावेत्व त्रात्राद्यः नचत्रमं तरेणाना चिविद्यावि विति तित्राह्यार्थमे वसं सारे विह्यादि वानित्यरीः त्रणानम्भातः न्यं व्यविद्यावभव तद्यव्यविव्यक्ति व्यक्ति व्यक् क्षित्र जीवसन्वेस्त्य स्तार्किका येवल्या सियो किसी त्या करेंगि आ स्वीते प्रके स्वने वे नानाना ज्यानिद न्य नंयतिर्रमेवनंत्र सामिन्तं वा जानेतः तथा वानु तथः एक वयर प्रानेद्रित एका देवः सर्वभनेषु गुरुति अष्मात्मात्रसितारमध्यां जीवस्यवाध्येति परम्बेमारपर्तानेद्र्यां नानातिभोगयवस्यान्यप्ति प्रतिदरमेक वेचित्र निहित्र नामा समासब दे ह संवेधितावू शोध कमी देन मधि गामिया मने भवि तमरि त्या विद्यानाभवः गवं चुभदश्रत्यतात ब्रह्माभि च्यानाभि चता द्वपण्यतेगव व्यवस्थादे तुभेदा देवल्यति संग्रानाभवः गवं चुभदश्रत्यतात ब्रह्माभि च्यानाभि दलक्षात्रात् गवं लेखद् वाच्याध्य वृक्षिद्वन प्रति वाण्यत्व स्थाने व्यवस्थाने व्यवस्थाने विद्यास्त्र स्थाने व्यवस्थाने व्यवस्यवस्थाने व्यवस्थाने व्यवस्थाने व्यवस्थाने व्यवस्थाने व्यवस्थाने व नेणांण स्थल सत्तिकारणाया धीना ना म्ला प्रस्व प्रस्व प्राच स्था है ते नो संसमानि के व न ते पर मार्थन : स पंत्रकितियेश्वत्यननागतसेनभवत्यसंगो एएंपुरुष इत्यादिश्वतिभ्यःसान्यस्यमानियम्बानपपतेः तर्ग:

यगपतिः अवेष्ट मेडीतत् समवाणवन्त्रमधालीन अवेन सलकार एतांपतिः एवं कार्यमलेकार णवारातागर्नामस्य वा जाचेक एका प्रकार एमावः निरु त्वषु छो एस अंक स्विते वे योगता ने उत्पाद्य ने प्रवास ने विद्या के व मध्या जा चेल शिवाएक समा हि तेथे मत्का द व्याप वि: प्रामभवप्रियेगि ता प्रधाने में के विस्ताने का कार्य के में के विस्तान का कार्य के स्वाप सःविक्ष कथ्यासात् तस्याताद् सहिल स्मातेना निर्वनिष्य तेव कार्य कृत्यायोगिति विवर्त वाद्य वाष्ट्री खते तथाचाविद्याच्याच्युद्धव्याणि रेतामा सेतियायप्यंः तन्वविद्याकार्याण्यम् यत्वेतिन्वविद्यापाः सयत्म स्त ज्ञनाह्मवतात्वे व्यवत् नत्यकश्रन्यताच निहित्तं पूर्वनकत्यनाहे तारिव प्राधाः क ल्य कानरिति म स्वकार्यक त्यवते ज्ञाताश्रवात् स्विधातराम्ब्रवाते वस्त्रवित्तानात् त्याचेकित्तानेनस्वितितानवा त्यस्याच्या स्वाच्या साञ्चात्य या सार्वाच्या वाम बाव ब्रह्मा नात् तथा वे ब्रावित ने नविवित्ता नव्या क्षित्रा विक्रित्ते विक्रिते विक्रित्ते विक्रित्ते विक्रित्ते विक्रित्ते विक्रित्ते विक्रिते विक्रित्ते विक्रित्ते विक्रित्ते विक्रित्ते विक्रित्ते विक्रिते विक्रित्ते विक्रित्ते विक्रित्ते विक्रिते विक् भावतंत्रात्रकातित्वतंत्रवात्रकंत्रभवति वितिषरमार्थयतं ऋविद्यावाष्ट्रव्यद्वित्वत्वतात् ज्ञानिवर्तिते पप तिः तथारमावातत्तार्यतेनः यरमान्त्रातत्पद्वद्वीदर्गतिः एतेनव्ववयद्वद्वीति दर्गतिः तस्वाधिमार्वातः । कार्यश्रीशिक्षीनवार नाप्रत्वत्रसङ्ग्रिमाहिलका दनाभावात एवंचवद्धी नानपूर्व ब्रवावगर्थवा पेमित तद्वित्रवंतिरिध्यास्य प्रथप नं अधान माद्यस्य यत्व रत्यनेना येदन्यतं दश्चितं आनंदा विवसित्यमाने भ तानिनायंत्र स्यादिश्वतेः अन्वयादित्यनेन सङ्घले नित्यतं विश्वतं सुर्विदेशकाला न्वयवा धनाते स्व गिरियनेन खत्रकारा ज्ञानन्यते धामाहेन विश्विक् हक मियनेना हितीयतं स्तामित्यनेन गरमा धीत मिति मत्यं ज्ञानमनेने ब्रह्मितानमाने दे ब्रह्मित्या दिवाक्या धीरणीतः अधन्तं पदाची श्रीप्राक्यते। जैनर ख्राकेनदर्भावतं क्षे सार्वकारस्यात्वेतवारतात् तथाहियाजीवः अध्यदे हे तियादे जीना दिविकारना तं श्रूच्यात् अनुमतेवान् अविद्यापात्मन्या शेषितत्वात् तं यां भत्य धी महीतिसवयः अस्यकी द्वास्य यतः ग्रामानः सर्वदायरिएममान स्वत्यर्थः न्नादिगन्धीतर्तिवा ननुनातादेवदनाम्नोदेवदनाम्नोदेवदनाम्नोदेवदनाम्नो वतिसंच घणा येः दे जाविस्त हिंगा खुच रेतिएवमे वास्ता दात्मवः सर्वे एतः जा स्रेति च त्र श्रीस्त्रसत्त्वनमादिमान् नावास्त्रेत्याह इतरत्रश्रीते जन्मा ययोग्ये तादित्यर्थः तथाच श्रीतः न्त्रायते वियते वाक्याचि नायं कृति श्रि स्वयभ्वक श्रित् स्र जातित्यः शाष्ट्रते ये पूर्व लिया विवास विव तरममानश्वरिश्याधामुतिः हरेनिम्यभगवजीताजीवस्थानमविवाशीचारयति सत्तरामकताभ्या

रित द्वादिका हिराएक असे से हदाम हो बहुता ने ने हिराएक अधिवेद देश बक्ता ने का उत्ता है ति है वितः करले हस्य मराभ्यका । असाव बहुवा धेरिरा गर्भ खबेदयदर्थ जा वेबा दियवा निया व स्वतिः यो ब्रामाणिविष्धाः प्रवेणवैवेदात्रा ब्राह्माति तको ने हरवमा सविष्ठिका ब्राह्म स्वया राज्य राष्ट्र निहिर त्याभेन हेदा विभावयोः प्रमेन्नरा द्यानां वर्षि वित्य स्विह द्यमनमेन नेने न तुम्सेना प्या विन्नान अलातिनविदः यहा सर्वाक्षिश्र तो त्रिशरीरयः सर्वाक्षिभ्रता न्यंत्रराय म्याने खतेग्यात्मा तर्यात्रम्य स्तर्या धामनीत्या विनिपर मात्रानेपतिषार्था। नन्दाहत मुनीन प्रतालामाण्यन हे भवति व ह्या। सिह हालं त्राम्याएं विसंवादे त्वाधित विषयता त्रिता मधामाएं ते धा वश्यान श्रमाएं दिकार एता बेंग्यक मन र माने स्थावेकाशोभविष्य तीत्वाह अणिति वेस रवश्ति यते यत्र यत्र पत्र विष्य विष्य विषय विषय वस्ति सरयसार्विकारयो सहाति माहमू ज्ञानम् नुभवेति मो हाहिविधः जावर्णन्यो विस्पन्यप्र श्रामा के वेदां त्रशासिविवार विमु स्वरन्भयने वेदां त्रशास्त्रविवार परात्ते यरा स्त्राने नाम मला वरापन 

्रामकार्वं प्रते अवादि त्र देखी का निवित्र कारणमा ने वित्र में वित्र प्रति के वित्र प्रति के वित्र प्रति के वित्र प्रति के वित्र के वित्र प्रति के वित्र के वित्र प्रति के वित्र सास्य मी प्रांसका स्यान जा नित्र का राग ते ना है से प्रमुख के वितिष्ठ है। नए र माएक है ने ने ने ये ले के स्थानिया क्तः तसाइ खिवचयक्षेत्राहस्यापरो स्तानवर्षचेतन्यस्थ वतसाधकत्वन तर्विवर्वकत्वानाचिव्रकेक रत्युल्य दत्रनवेदानानामा मात्विमयाहतभेविस्डिते विव्यालामाना वायोग्याते ने पादितीन ने व्यापादिते भाष्य कांप्य भितिः ग्वंपकाईनतत्वद्वाचारीमुत्तावराईनत्व्ह्यंवस्मारभत्ते न्यूकारावाववादांभ्यांतिः यूर्वत्रपंच तेरित्यायेन तेज्ञां वारीत्यादिना यम्ब्रह्मातात्रयाताते ज्ञाव ज्ञानात्रकी विवर्गः सम्बामिकीव मुक्तीर जतवत् छ। देगप्राष्ट्रित्वरतेत्रपातांत्रेज्ञावृज्ञांनासासात्वितित्वाज्ञिसर्गः त्युक्तं विध्यधिक रतान्यायेन्तुपंचनविष् द्रमधते ए राग्वेतद्रमन्द्रम् वालित्रभवः ज्यक्तितृश्वदेविष्यमेन्द्रमिवार् लाखः कतः न्यसिते नरीय के ज्यासनजाकाराः संसेत्रतिष्युते त्युभययां सर्गीतिकथ्यभ्यत्रक्षग्रीतिद्रष्ट्यं तिस्थाते दृष्टां तमा ह नेजावारि मद्याविविमयइति विविमयोग्य त्या वात्या सः वाति ज्ञीभावाः तिन्त्र न्यावभीन स्वइतियावत् तयावस्त्रतिः यदमे लेतितन् यंते जसस्त ५ यं यन्धे क्षेत्रद वाँ क्षेत्रत्व ज्ञस्या या गादमेर मितं वाचा रंभ कि विका राजामध्ये यं त्रीलिन् यालित्व सत्यित्यादिना के त्वस्याविविकार स्यान्त न ताद्शीयति न त्यारंभवा देः जायति लामबारेबार्भवित तथाहि यर माखितरे एसंयु न्यमानो छ एक मारभते रत्यु पेयते तत्र छ एक समबाधी कार्यात स्वापित स्वाप स्वापित स्वापित स्वापित स्वापित स्वापित स्वापित स्वापित वन्तिपतिः एवं परिलामीपिष्रधानस्यकार्त्यानवा एक देशे नवा न्या चेकार एविनाशायितः दिनीयेमा

ई में देवत यी श्विम रेले प्रक्रम से वस्य ज्ञामिद स्वत्या कर्ष एं प्रतिषाद्यमां वर्षः स्वय्या मक्ष्या स्वापित ने मान र्षम समादितिक त्रेले स्वयंक्ष त्रेल स्वार्याते इत्र त्रात्व वकारा दूसते। त्यु लाभः स्वयं वासी निवास के त्रात्वार लिति मुक्तिका प्रिन्याते क्र श्विनाश्वतस्थित नाशाना श्वांका कितर तम् वित्र वित्र वित्र स्थित स्थत स्थित हेता धरिम त्रेष्ठा सवादी तृस्य न्यात् ए वेस्द्रिष इतरतः इतरत्र का वीतर तद्यत्र भानवादिक्यः वाक्यात्र पचनादिके षाच्चनासतो जगतार एतीया है अर्थ खिन इसि निहसतो वर्धनिविदित्वा के अवित्या वर्षे के न्यवस्ति ति ्मेवः तथारक्षः यः सर्वतः सस्वविद्याद्यात्रानम् वत्यः तस्मादेत द्वानामन्वमन्वत्रेत्रावते द्वति सदवताम्यदे सत्रत्रासीद्वे कनेवादित्तेवं तदेसतव द्वाया प्रजावे वत्याद्याच स्वस्पसाधनप्रयोजनादि ज्ञान वत्रावजगत्तारण तंद्रीयितिश्रितः सर्वयकारेणमा मन्तिविशेषन प्रसर्ववस्त्र ज्ञानाति श्रीतरः सर्वतः सर्वदितियद्द्रवाची दितिः अर्थानामितः तिर्धिते अर्थिति सम्मिस् वीकर्षवार त्याकित्यतत्र वाविस्य ने तिसः वयति अर्थ वाचणार्तरत्र आचिति श्रवे ते वसंवयः एवेच वृत्वत्ती पाद्यत्ते त्र परमा लुकार लेवारः वयानकार एवार स्थित राक्तः नन् मामत्कारणतापरमाणू नाषधानस्य अवैद्यति सत्त्वपरिमाणनसाव इसिमवान ब्रह्मण्यानि देव कर्नन सर्व मान करिला६ त्यते जाह स्वरोद्धित स्वयमेशा जने यकाशात श्रीत स्वरोड अन्यान पेट्या प्रकाश रेप रत्य जे तथा ण वसवितात्रकाशतर्त्वाप्यादिवर कत्त्वाप्यादिकतेनसर्वविषय्ञानविषयः तानन्यविविद्यतेनतात्नप्रधानस्या स विकारणता प्रदेगरत्यथीः एवंचे कविहाने नेसर्विद्यान प्रतिद्वासप्रिताभवति अन्यचात्र धानिविद्यानेन नेता अस्य नर्भवेष तर्काणीणां प्रवाणां ज्ञानार्थभवात वृद्याताविदिते ते प्रत्वाणां स्वतप्रवादित रेषां चत्र १दव त्यान तरकतिरे का चेना अतंत्र्य त्रायता मतंत्रतमा विज्ञा ते विज्ञा ते विज्ञा ते विज्ञा के विज्ञा ते विज

ने विन्ति वित्तित्याचिया ज्ञात्मनियल्यो ६ छे अने मतेविज्ञाते इदेस विविज्ञाते वित्ति नित्या हो अनिया दिने कि वजन ने स्वीव ज्ञानअति ज्ञाषपतेः नन ब्रह्म कृत्र एकि च्योक् विज्ञाने असर्व विज्ञाने प्रयोग ने वद्या पारू वेय ते नांचातेत्राभ्यवगत्राने तस्य ब्रम्का वं तेचीर वेयते नां प्रामा एवं प्रमेगत कि वत्तात व्राप्त कारणता विववस्या वत्तात्रका केत्र कारणता विववस्या वत्तात्रका केत्र कार्यो कारणता विववस्या वत्तात्रका केत्र कार्यो र यान आसप्रश्नासारिव ली समाविभी वित्वान तथा च छति। गुरुष महत्ताम् तस्य विक्राविन मे य दे प्रदेशे यन विद्या शावेदस्या विव्रहेता पादा न ने ब्राह्म कार्य ने विद्या के स्वर्थ के स्वर्ध के रिततं वर्षेष्वेषायेस्ततायस्तता सामा व्यवस्त तं त्र वर्षे देवे राष्ट्रिय मानाता नावा सार १ द मेवप्र त्यानित्राधितर्षातेनदार्ति वयातिनित्रामः यह बाज्ना वसाज्ञानितयुर बज्ञन्यः सब्जा व विद्यानात् एवं वे यम्बाणिवनाशान्तायमानाविनिन्नी वीनन्यः तदर्थ्यवद्यितित्तिमानाविषयत्वात् तयाच वेदतद्यं जो नक्ति स्कालना नवहाणः सार्वत्र वाक्षाता नवा वेद ह्य चात्र वेषत्व एवं वस्तिएक वितानेन सूर्व वितान प्रतिज्ञानसेका वनीयां वायं वायां वायां त्र प्रवेश प्राप्त व्याप्त विते वेद विष्ट्र से वी एवं काष्ट्रा नशकिः सद्याप निष्णारिंगतप्रकाशनशक्तिकार वे रूप्यादानकदीयगत्रवक्ताश्चनशक्ति विदिति अतिवेदियादान्त्रेनारे बुख्तं:मार्वस्थिदः के वित्र हिर प्यमभए बेवेद्यवक्तानगकार एवे त्या उक्ता विस्तव रोति हृद्याय आदिक्वये

डोम् अविद्यां वर्षेत्र ने तत्वातस्य प्रसादतः जीभागवत्व द्वात्रं का जिल्ला वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र त्राप्त व समार्थे के द्वार के विद्या विद्या के देश के के विद्या के ति के का के के के के कि का के कि का के कि का श्रमात्र रेड व्रियंचनात्रविवयोभून मर्चेद्र्यावन्यात्रव्यात्वन्यात्वत्यात्वात्रमेवद्ययतेनेचित्रमात्रमाच स्विति प्राष्ट्रितिताना स्यूलक्ष द्वाभूतानी व्यवतारतः सत्यानी निर्णानभूतेयर मार्थे सत्यमा त्वानेद्रशिर वा धादश्यति सर्वभ्रमा धिल्रवता तर्ववाधावधिता च्या मार्थस्य ले निहिनिरिध लाने भ्रमाति न वानिर् विधि वी धः तत्र सर्व समाधि हा ततं च ना चला वता रकारिताद शितं सर्व वा साव्धितं व ते ना वारि स्टायपाविति ध्यायेमितिरिद्यासेमध्या नम्बनितिर्ध्या सन्द वसेवा भिष्ठते नत्पासने निरिध्यासनेतिवस्य प्रयोद्येष त्ययानेत्रतित्यार तात्रवंतित्यं ज्याकावारे प्रष्टकात्रीतवामंत्यातिरिकातित्रतित्रत्या ततस्तुतंय. ग्रातेतिक लंग्या वमान्यत्यारिष्ठत्याचा समाताकारमा युन्नेन्विति । यासनेत्वकावन्याने वेत उगमा वतंत्रमा महितापाप वाहरणं वच्या व मोदेव साथे हिति है है तो है या तो देव देव दिव स्विता दिन वस्त्रस्यानयसम्बत्रदितिधिविविनद्विराध्यविषयावाच्यो वस्याम्भनेसादि दिविरामणुष

गर्वसालिकारं तरेवत्रसालं विति विद्रियम् वितारिक स्त्रीय क्रिया विताल के वित वर्तिति अतिसाग्वचावर्तमानायां विदिध्यासनार्यहा युक्त श्रवण्यात्व गृत्ववना वर्षा वसाना सर्वापनिवधीनाधीमहीत्रकं एत्यपम्मल लेस्बिदासर्वका येचनातिते छामगेले ये बाहिर स्थाप म विन्त्रमलाय नर्निति सादिशा लिसि ई एवं अध्येष ब्रह्मालिति स्वाह्यमा नस्य या मास्त्र स्वापिते पार्यिते व त्यदार्ष रपतामार जन्मा ग्रस्यवन इत्यादिना न्रस्य प्रत्यह्नादिस कालप्रमाल्स निधावि तस्य प्राती न न्यादि जन्म स्यितिभगवत्राभवतीतिस्यधीम्हीतिस्वं धः तथाब म्युतिः यता बाद्रमाविभताविज्ञायते येनजाता निजीवति ध्ययमाप्रिविविशंती त्याचा जाने दे ब्रह्मेति बनानात ज्याने दा हो वस्त विमानि नायंत र त्याचा बनगन्ना न्या हैय तिलयक्रिएतां ब्रह्माण्यक्रियति यत्रति प्रस्ता प्रस्ता विसर्गा निकर्तः प्रस्तितिया लिनिसर्गात् न नारी तित्राणसी जानावर बोरिः सर्वादीति सर्वामानीतियावत जनाव माहित मिति हे कायेत्व है बेनायेत य नुन्यस है भूरमय जामी दिति प्रते । म्यते वत्रम लाहा सिन ने त्या है त्या दिति हु दे सि दे सि तिस द्वेस्वनारणलेकारेखनस्यत्वात् इतरत्त्रत्यस्यतात् प्रत्यतिद्वित्रतीत्वभावात् कतत्त्व खंड सोम्प्रें स्पादितिहावाचक पंरातः सन्नाविते निवासे नामतः कारेण ताष्ठिते वास सङ्खं न स्वान नामतः यानिकियः सदेवसे क्रेयमञ्जासीहितिश्रीतिवासान्वयात् रतरतिश्रास्वार्यम् जासीहित्यसनः स्तान्व याचितिवा त्यांनासत्यर सन्दमतेन भाषा वस्या तत्येव यो जनीयं एत ज्ञासमान की दिति समन्यया ध्यायेच व